# पार्श्व (पद्मा) एकादशी — चयनित पूर्ण कथा का पुनर्कथन

Parsva Ekadashi Katha — Complete Selected Chapter Retelling

Source: Sanskrit Wikisource contributors — complete chapter 57, controlling revision 336438. Also compared: Wikisource revision API — complete controlling wikitext; Creative Commons Attribution–ShareAlike 4.0 — adaptation licence; Wisdomlib Sanskrit chapter 57 — full electronic comparison; Wisdomlib / N. A. Deshpande chapter 57 — whole English comparison only; prose not copied; Wikisource rightsinfo — site-wide CC BY-SA 4.0 reuse basis.

Valkala's own retelling of the katha in Padma Purana, Uttara Khanda 6.57.1–41, Sanskrit Wikisource revision 336438, not a transcription of the original text.

## पद्मा और राज्य का अकाल

KATHA 6.57.1–16

युधिष्ठिर केशव से भाद्रपद शुक्ल एकादशी का नाम, देवता और विधि पूछते हैं। कृष्ण ब्रह्मा द्वारा नारद को कही कथा सुनाते हैं। विष्णु की आराधना के लिए नारद वही प्रश्न करते हैं। ब्रह्मा उन्हें वैष्णव कहते हुए हरिवासर की श्रेष्ठता, पद्मा नाम और हृषीकेश की पूजा बताते हैं। सुनने से बड़े पाप मिटने की धार्मिक प्रशंसा आती है।

विवस्वान के वंश के सत्यसंध, प्रतापी चक्रवर्ती मांधाता प्रजा को पुत्रों की तरह पालते हैं। राज्य में अकाल, मानसिक पीड़ा और रोग न होने, धन-धान्य की समृद्धि और न्याय से प्राप्त कोष का वर्णन है। अपने वर्णाश्रम के धर्म में लगे लोगों और कामधेनु-समान भूमि का चित्र आता है। बहुत वर्ष बाद कथा कर्म-परिपाक की भाषा में तीन वर्ष वर्षा न होने का प्रसंग कहती है। लोग भूख से पीड़ित होते हैं; देव और पितर के अर्पण तथा वेद-अध्ययन रुकते हैं।

प्रजा राजा से कहती है कि पुराणों में जल को नार कहा गया है, भगवान का आश्रय होने से नारायण नाम आता है। सर्वव्यापी विष्णु को वर्षा-रूप में कहा जाता है; वर्षा से अन्न और उससे प्रजा का जीवन है। वे सुरक्षा और कल्याण माँगते हैं। यह धार्मिक व्याख्या है, आधुनिक मौसम-विज्ञान नहीं। भूख, रोग या अकाल किसी व्यक्ति या समुदाय की नैतिक विफलता का प्रमाण नहीं।

Yudhishthira asks Keshava the name, deity and method of Bhadrapada's bright Ekadashi. Krishna recounts what Brahma told Narada. Seeking Vishnu's worship, Narada asks the same questions. Brahma calls him a Vaishnava and praises Harivasara, names Padma and describes worship of Hrishikesha. Hearing is praised as removing grave sin.

Mandhata, a truthful, powerful emperor of Vivasvat's line, cares for subjects as sons. The kingdom is described without famine, distress or illness, with abundant wealth and grain and a justly acquired treasury. People follow varnashrama duties and the land resembles Kamadhenu. After many years, the story uses karmic maturation to introduce three years without rain. Hunger afflicts the people; offerings to gods and ancestors and Vedic study cease.

The subjects explain water's name nara in the Puranas and Narayana as the Lord's abode in it. Pervading Vishnu is described in rain's form; rain brings food and food sustains people. They ask for security and welfare. This is religious explanation, not modern meteorology. Hunger, disease or drought does not prove anyone's or any community's moral failure.

## अंगिरा का प्रस्ताव और राजा का इनकार

KATHA 6.57.17–32

राजा अन्न को ब्रह्म, प्राणियों का उद्गम और संसार का आधार बताकर प्रजा की बात स्वीकारते हैं। वे कहते हैं कि राजाओं के अनुचित आचरण से प्रजा दुख पाती है, पर अपने विचार में ऐसा कर्म नहीं देखते। फिर भी कल्याण के लिए प्रयत्न करेंगे। विधाता को प्रणाम करके सीमित परिच्छद के साथ वन जाते हैं; अंग्रेज़ी तुलना असंख्य सेवक कहती है।

आश्रमों में घूमते हुए वे ब्रह्मा के पुत्र तेजस्वी अंगिरा को देखते हैं। वाहन से उतरकर हाथ जोड़कर चरणों को प्रणाम करते हैं। मुनि शुभकामना देकर राज्य के सात अंगों की कुशल पूछते हैं। राजा कुशल कहते और मुनि का स्वास्थ्य पूछते हैं; आसन और अर्घ्य के सम्मान के बाद पास बैठकर आगमन का कारण बताते हैं। धर्म से राज्य चलाने पर भी वर्षा नहीं हुई; वे संशय दूर कर प्रजा के लिए कल्याण माँगते हैं।

अंगिरा कृतयुग और चार चरणों वाले धर्म की चर्चा में केवल ब्राह्मणों के तप के अधिकार का दावा करते हैं। वे राज्य में तप कर रहे ‘वृषल’ कहे व्यक्ति को वर्षा रुकने का कारण बताकर उसके वध का प्रस्ताव देते हैं। चयनित संस्कृत का वृषल पद रखा गया है; अंग्रेज़ी तुलना चाण्डाल कहती है। राजा साफ मना करते हैं: निर्दोष तपस्वी को नहीं मारेंगे और दूसरा धर्मोपदेश चाहते हैं।

हानिकारक जाति-आधारित प्रस्ताव छिपाया नहीं गया और उसका समर्थन नहीं किया जाता। किसी का जन्म पूजा या तप से बहिष्कार, बलि, हिंसा या अकाल के दोष का आधार नहीं। राजा का इनकार कथा का आवश्यक भाग है, केवल वर्षा मिलने का प्रसंग नहीं।

The king agrees, describing food as Brahman, the origin of beings and the world's support. He says royal misconduct can distress subjects but finds no such deed in his own reflection. He will nevertheless seek their welfare. Bowing to the creator, he enters the forest with a bounded retinue; the English comparison says innumerable attendants.

Visiting hermitages, he sees radiant Angiras, Brahma's son. Leaving his vehicle, he bows with joined hands. The sage greets him with blessings and asks about the kingdom's seven constituents. The king reports well-being and asks after the sage's health. After seating and respectful offering, he explains his visit: despite righteous governance, rain has failed; he seeks resolution and his people's welfare.

Discussing Krita age and four-footed dharma, Angiras claims austerity belongs only to Brahmins. He blames lack of rain on an ascetic described as vrishala and proposes killing him. The Sanskrit label remains; the English comparison says chandala. The king refuses to kill an innocent ascetic and asks for another teaching.

The harmful caste-based proposal is disclosed, never endorsed. Birth does not justify exclusion from worship or austerity, sacrifice, violence or drought blame. The king's refusal is essential to the story, not merely the later rainfall.

## पालन, वर्षा और पूरा समापन

KATHA 6.57.33–41

अंगिरा तब भाद्रपद शुक्ल पद्मा का व्रत बताते हैं और उससे अच्छी वर्षा, सिद्धि तथा उपद्रव-नाश की धार्मिक आश्वस्ति कहते हैं। राजा प्रजा और परिच्छद सहित पालन का उपदेश सुनकर लौटते हैं। चार वर्णों सहित प्रजा के साथ व्रत करते हैं। कथा में बादल बरसते हैं, भूमि पानी से भरकर अन्न-समृद्ध होती है और लोग सुख पाते हैं; मुनि के प्रभाव से इसका संबंध कहा जाता है।

समापन में द्विज को दही-भात, जलपूर्ण और वस्त्र में लिपटा घट, छाता तथा पादुका देने की चर्चा आती है। फिर गोविन्द को नमस्कार, ‘बुधश्रवण’ नाम, पाप-क्षय और सुख की प्रार्थना का आशय है। नाम का नया अर्थ या देवता नहीं बनाया गया और मंत्र अलग करके अनिवार्य पाठ नहीं दिया गया। भोग, मुक्ति और लोगों के सुख की प्रशंसा के साथ पढ़ने या सुनने से पाप-मुक्ति का कथन आता है।

अलग समापन-वाक्य अध्याय 57 को उत्तरखण्ड के उमापति–नारद संवाद में भाद्रपद शुक्ल पद्मा नाम देता है। तत्काल कृष्ण–युधिष्ठिर संवाद के भीतर ब्रह्मा–नारद की कथा है। सभी 41 क्रमांकित स्थान और समापन इस मौलिक संक्षिप्त पुनर्कथन में पूरे हैं। पार्श्व और परिवर्तिनी का उत्सव-पृष्ठ इसे पद्मा प्रसंग के रूप में जोड़ता है; वामन–बलि या करवट बदलने का नया दृश्य नहीं मिलाया गया।

वर्षा और धार्मिक फल मौसम का पूर्वानुमान, निश्चित समृद्धि या भूख दूर करने का उपाय नहीं। भोजन, पानी और राहत की व्यावहारिक सहायता जारी रखें। उपवास, दान या खरीद आवश्यक नहीं; कोई दिन या घड़ी का समय इस कथा से नहीं निकाला जाता।

Angiras then recommends Bhadrapada's bright Padma vow, religiously assuring good rain, fulfilment and removal of troubles. The king returns after hearing advice to observe with his people and retinue. He observes with the people, including the four varnas. In the narrative clouds rain, water fills the land, crops abound and people find happiness, attributed to the sage's influence.

The close discusses giving a dvija curd-rice, a water-filled cloth-wrapped pot, umbrella and footwear. It conveys a salutation to Govinda, the name Budhashravana, and requests for release from sin and happiness. No new etymology or deity is invented and no isolated compulsory formula is supplied. Enjoyment, liberation and people's happiness are praised, followed by release from sin through reading or hearing.

The separate colophon names chapter 57 as Bhadrapada's bright Padma within the Uttara section's Umapati–Narada dialogue. The immediate Krishna–Yudhishthira exchange contains Brahma–Narada's account. All 41 numbered positions and closing statement are covered in this condensed original retelling. The Parsva/Parivartini hub links it as the Padma account; no Vamana–Bali or turning-over scene is blended in.

Rain and religious rewards are not forecasts, guaranteed prosperity or practical famine relief. Food, water and relief assistance continue. Fasting, gifts and purchases are not required; no date or clock time is calculated from this story.

Source licence notice (it travels with every copy of this text):

Parsva Ekadashi Katha — adapted from Sanskrit Wikisource contributors, Padma Purana 6.57.1–41, revision 336438, linked in Sources. Electronic source: CC BY-SA 4.0, https://creativecommons.org/licenses/by-sa/4.0/ . Changes: original condensed Hindi prose, full Roman-Hindi and English renditions, summaries and contextual notices by Valkala Editorial (2026). These adaptations are distributed under CC BY-SA 4.0. No source endorsement implied. This licence covers the retelling and its language layers, not unrelated code or site content. No modern Wisdomlib translation is included.
Copyright 2026 Valkala Editorial (original adaptations); shared under CC BY-SA 4.0. Attribution remains Sanskrit Wikisource contributors.